राज्यसभा /लोकसभा पटल पर प्रस्तुत करने हेतु कागज़ात

अधिप्रमाणित

नई दिल्ली
दिनांक

कर्नल राजवर्धन राठोर (सेवानिवृत्त)
राज्यमंत्री
सूचना और प्रसारण मंत्रालय

कर्नल राज्यवर्धन राठौड़
सूचना और प्रसारण राज्य मंत्री

सरकार द्वारा वर्ष 2015 -16 के लिए राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम के कार्यकरण की समीक्षा

1. राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लि. (एनएफडीसी), को वर्ष 1975 में (भारत सरकार का 100% स्वामित्व) भारत सरकार द्वारा फिल्म उद्योग के सुसंगठित, सक्षम और एकीकृत विकास हेतु योजना बनाने और उसे बढ़ावा देने के मुख्य उद्देश्य से निगमित किया गया था। एनएफडीसी के साथ पूर्व के फिल्म वित्त निगम (एफएफसी) तथा भारतीय चलचित्र निर्यात निगम (आईएमपीईसी) को मिलाकर वर्ष 1980 में एनएफडीसी का पुनर्गठन किया गया था। एनएफडीसी ने अब तक विभिन्न भारतीय भाषाओं में 300 से ज्यादा फिल्मों का वित्तपोषण/निर्माण किया है जिनमें से कई फिल्मों को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से नवाजा गया है।

2. एनएफडीसी ने अपने अस्तित्व के बाद से गुणवत्तापूर्ण और सार्थक सिनेमा का निर्माण किया है, जिसने समाज के बौद्धिक और कलात्मक परिदृश्य में योगदान दिया है। कलाकार, निर्देशक, लेखक और निर्माता जिन्हें बाद में बड़े पुरुस्कारों से नवाजा गया था, उन्होंने एनएफडीसी द्वारा बनाई गई फिल्मों की प्रंशसा की है। एनएफडीसी की फिल्मों ने न केवल प्रतिभा, बल्कि नई सिनेमाई भाषा के साथ-साथ विभिन्न विषयों और सामाजिक रूप से प्रासंगिक विषयों पर कार्य भी किया है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी, एनएफडीसी सह-निर्माण के लिए सबसे विश्वसनीय निर्माता है। एनएफडीसी द्वारा सह-निर्मित फिल्में विश्व भर के विभिन्न फिल्म समारोहों में दिखायी जाने के साथ-साथ डिजिटल रूप में और थियेटरों में रिलीज़ की गयी हैं। इसके घरेलू सह-निर्माणों को प्रशंसा व पुरस्कार मिले हैं और साथ ही, इन्हें व्यावसायिक सफलता भी मिली है।

3. यह कंपनी सूचना और प्रसारण मंत्रालय की 12 वीं पंचवर्षीय योजना स्कीम जिसका शीर्षक "विभिन्न भारतीय भाषाओं में फिल्मों का निर्माण" है, का क्रियान्वयन करती है, जिसके अनुसार फिल्म निर्माण के लिए मौजूदा उप-नियमों के मुताबिक एनएफडीसी द्वारा फिल्मों का निर्माण/ सह-निर्माण किया जाता है। वर्ष 2015-16 के दौरान, एनएफडीसी ने आइलैंड सिटी और चौथी कूट नामक फिल्में बनायीं जिनमें से एक का निर्देशन एक नए फिल्म निर्देशक द्वारा किया गया था।

4. एनएफडीसी ने स्टूडियो/वितरकों के साथ सहयोग करके बनायी गयी/सह-निर्मित फिल्में रिलीज़ की हैं जिसने *क्यूसा- द टेल ऑफ लोनली घोस्ट, मांझी- द माउंटेन मैन, शेशेर कोबिता, कलियाचन, चौरंगा* जैसी फिल्मों की महत्वपूर्ण और व्यावसायिक सफलता के लिए उल्लेखनीय विपणन एवं प्रचार प्रयासों को सुनिश्चित किया है। उसने साल-दर-साल नई-नई फिल्में रिलीज़ की हैं और गूगल प्ले एवं आई ट्यून जैसे उभरते प्लेटफार्मों पर पहुंच और डीवीडी की बिक्री बढ़ाने हेतु विपणन प्रयासों में वृद्धि की है। एनएफडीसी की मंशा है कि ऐसे प्लेटफार्मों पर उपलब्ध फिल्मों को बढ़ाया जाए।

5. एनएफडीसी की वीओडी साइट, **www.cinemasofindia.com** को *क्यूसा- द टेल ऑफ लोनली घोस्ट* की भारत में थियेटर रिलीज़ के साथ दिनांक 20 फरवरी, 2015 को फिर से शुरू किया गया था। ये फिल्में विश्व भर के दर्शकों के लिए भुगतान-प्रति-दृश्य और मासिक व वार्षिक सदस्यता-शुल्क के आधार पर उपलब्ध हैं। एनएफडीसी कैटलॉग और नई फिल्मों के सैटेलाइट सिंडिकेशन के लिए सबसे बड़े चैनलों/प्रसारकों के साथ सहयोग कर रहा है। इसी प्रकार, प्रमुख वीओडी प्लेटफार्मों पर फिल्मों के मुद्रीकरण का कार्य चल रहा है।

6. सूचना और प्रसारण मंत्रालय (आईऐंडबी) ने भारत में विदेशी फिल्म निर्माताओं द्वारा फिल्म शूटिंग को बढ़ावा देने और उन्हें सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से वर्ष 2015 में राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम (एनएफडीसी) में फिल्म सुविधा कार्यालय (एफएफओ) की स्थापना की है। यह एकल खिड़की सुविधा और मंजूरी तंत्र के रूप में कार्य करता है जो भारत में फिल्मांकन को आसान बनाता है और साथ ही, फिल्म-अनुकूल पारिस्थितिकी तंत्र बनाने व हमारे देश को फिल्मांकन गंतव्य के रूप में बढ़ावा देने का प्रयास करता है।

7. एनएफडीसी का फिल्म बाजार दक्षिण एशिया के उभरते और स्थापित फिल्म निर्माताओं को विभिन्न वितरकों, निर्माण गृहों, सहारोही कार्यक्रमों, फिल्म क्यूरेटरों, बिक्री एजेंटों और अन्य महत्वपूर्ण हितधारक बिरादरी के साथ सहयोग करने और उन्हें अपने कार्य दिखाने के लिए मंच प्रदान करता है। फिल्म बाजार वर्ष 2007 में एक मामूली शुरुआत (18 देशों के 204 अतिथि) के साथ, दक्षिण एशियाई फिल्म निर्माताओं के लिए अंतरराष्ट्रीय फिल्म बिरादरी को अपनी कहानियां पेश करने के लिए एक फोकल प्वाइंट बन गया है। वर्ष 2015 में, कनाडा के समर्पित प्रतिनिधि मंडल सहित 38 देशों के 1102 प्रतिनिधियों ने फिल्म बाजार में भाग लिया। फिल्म निर्माता और प्रतिभाएं फ़िल्म बाज़ार को उत्तरोत्तर रूप से फिल्म शुरू करने, वित्त पोषित करने, सह-निर्माण करने, फिल्मों का वितरण करने (समारोह में भाग लेने सहित) हेतु प्रमुख मंच के रूप में देखते है।

****